स्वच्छता के लिए स्कूलों की साफ-सफाई भी निजी हाथों में जाएगी, स्कूल शिक्षा विभाग तैयार कर रहा है खाका

निजी एजेंसियों को सौंपेंगे सरकारी स्कूलों की सुरक्षा

जबलपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

सरकारी हायर सेकंडरी स्कूलों की सुरक्षा की जिम्मेदारी अब निजी एजेंसियों के हाथों में देने की तैयारी हो रही है। स्कूलों में साफ-सफाई से लेकर परिसरों को स्वच्छ रखने का काम भी निजी एजेंसियां संभालेंगी। सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता बढ़ाने की दिशा स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा शुरू किए गए अभियान के तहत ही ये जिम्मेदारी निजी हाथों में सौंपी जाएगी।

अभियान में सबसे पहले सरकारी स्कूलों में पढ़ाने के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों का चयनकर उन्हें रिफ्रेशर ट्रेनिंग दी जाएगी। संभवत: आगामी सत्र से यह प्रोजेक्ट जमीन पर आने की संभावना है।

दो स्मार्ट क्लास : स्कूल शिक्षा विभाग इस अभियान में स्कूलों में स्मार्ट क्लास शुरू करने पर जो दे रहा है। इसमें हर स्कूल में कम से कम दो विषयों की स्मार्ट क्लास का होना जरूरी है। गुणवत्ता योजना में शामिल स्कूलों

में दो-दो स्मार्ट क्लास बनाए जाने की तैयारी की जा रही है।

अगले महीने तक सभी पद भरेंगे : शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण सुझावों में एक सुझाव स्कूलों में खाली पड़े शिक्षकों के हर विषय के पदों को भरने का भी था। अधिकारियों की मानें तो यह प्रक्रिया भी हाल ही में हुई नियुक्तियों से अगले महीने तक पूरी कर ली जाएगी।

दिल्ली से लेकर कोरिया तक दौरे : कुछ महीनों पहले दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था में हुए सुधार व गुणवत्ता को देखने के लिए अधिकारियों का दल गया था, आने के बाद उन्होंने कई सुझाव दिए, उनमें से कुछ को लागू किया जा रहा है। स्कूल शिक्षा मंत्री प्रभुराम चौधरी के नेतृत्व में एक दल कोरिया गया था, जिसने वहां के शिक्षा मॉडल को अपनाने संबंधी सुझाव भी दिए गए हैं।

700 शिक्षक-प्राचार्य की हुई ट्रेनिंग : अधिकारियों का कहना है कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में शुरुआती कदम उठाए जा चुके हैं। इसके तहत प्रदेशभर के करीब 700 शिक्षकों व प्राचार्य को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने संबंधी ट्रेनिंग दी जा चुकी है। चार से पांच दिन की यह ट्रेनिंग भोपाल की प्रशासनिक अकादमी में हुई थी।

> सरकारी स्कूलों की सुरक्षा से लेकर साफ-सफाई व्यवस्था तक निजी कंपनियों से कराने पर विचार चल रहा है। हालांकि यह कब से शुरू होगा यह कहा नहीं जा सकता है।
>
> **-आईरीन जेपी सिंथिया**
> संचालक, राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल

प्लास्टिक की खाली बोतलों को तालाब किनारे से उठाती है योगिता... फिर घर के सजावट के सामान करती है तैयार, अब तक 500 हैंगिंग पॉट बनाए

पर्यावरण प्रहरी : निजी स्कूल में शिक्षिका योगिता ने बचपन के शौक को पर्यावरण बचाने का हथियार बनाया, अब तक 25 युवाओं को दी ट्रेनिंग

मंडे पॉजिटिव

भास्कर संवाददाता | झाबुआ

ये है 22 साल की योगिता पाठक। एक निजी स्कूल में टीचर है। योगिता को बचपन से आर्ट और क्रॉफ्ट का शौक है। जब बड़ी हुई तो इस शौक के साथ ही एक जिम्मेदारी के भाव मन में आ गए। प्लास्टिक की खाली बोतलों का कचरा और दूसरे वेस्ट मटेरियल से अपने घर के पास के तालाब के किनारों को पटा देखा तो सोचा, क्यों न अपनी कला से इस गंदगी को खत्म किया जाए। एक साल पहले उन्होंने अपनी इस सोच पर काम शुरू कर दिया। योगिता खुद तालाब के पास से खाली बोतलें बीनने जाने लगी, लोगों से पुरानी प्लास्टिक बोतलें मांगने लगी। उन्होंने प्लास्टिक स्ट्रा और डिस्पोजेबल कप भी इकट्ठे करना शुरू कर दिए। फिर वो इन चीजों से सुंदर कलाकृतियां बनाने लग गईं। एक साल में कुछ और लोग उनसे जुड़ गए। अब वो दूसरों को इसका प्रशिक्षण दे रही हैं। अब वो सरकारी स्कूलों में भी बच्चों को वेस्ट मटेरियल ये कलाकृतियां बनाना सिखाएंगी। अभी तक योगिता 500 से ज्यादा ऐसी कलाकृति तैयार कर चुकी है। अब वह अपने साथ लोगों को भी जोड़ रही है, वह 25 लोगों को ट्रेंड कर चुकी है।

कलेक्टोरेट में हैंगिंग पॉट लगाकर उनमें पौधे भी लगाए, अब प्रदर्शनी भी लगाएंगे

योगिता का कहना है, हर कोई पर्यावरण को बचाने और प्लास्टिक से मुक्ति दिलाने में अपनी ओर से कुछ न कुछ करे तो ये समस्या ही खत्म हो जाएगी। मुझे जो आता था, उससे मैंने कोशिश शुरू की। शुरुआत में जब बोतलें बीनती थी तो लोग हंसी उड़ाते थे। परिवार वाले भी टोकते थे, लेकिन मां ने समझा और पूरा साथ दिया। प्लास्टिक की बोतलों से मैंने हैंगिंग पॉट बनाना शुरू किए। सभी सामान से सजावटी सामान भी बनाने लगी। असर ये हुआ कि अब लोग मुझसे ये सामान बनवाने लगे। मैंने कभी इन्हें बनाकर बेचने का नहीं सोचा। मैं सिर्फ ये चाहती हूं कि लोग प्लास्टिक का उपयोग बंद कर दें। जो गंदगी फैल चुकी है, उसे दूर करने में एक-दूसरे की मदद करें।

योगिता का कहना है, प्लास्टिक बोतलों को अलग-अलग तरह के शेप में काटकर अच्छी कलाकृतियां बन सकती हैं। हैंगिंग पॉट इसका सबसे अच्छा उपयोग है। मेरे काम को देखकर कलेक्टर साहब ने कलेक्टर कार्यालय की एक दीवार पर मेरे बनाए हैंगिंग पॉट लगवाए। मैंने उनमें पौधे भी लगाए। ये फुलवारी देख अब दूसरी जगह से भी लोग मांग कर रहे हैं। अब ऑल इन वन नाम से मेरा पूरा ग्रुप है। इसमें 7-8 लोग हैं। मई में मैंने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम रखा था। दो महीने के अंदर एक प्रदर्शनी भी रखना है। इस अभियान को ऊंचे लेवल तक ले जाना चाहती हूं, जब तक मेरा शहर प्लास्टिक मुक्त न हो जाए।